



केन्द्रीय विद्यालय क्रॉनिकल

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

* यह 'केन्द्रीय विद्यालय क्रॉनिकल' के अंग्रेज़ी संस्करण का हिंदी अनुवाद है।

संपादकीय

स्वच्छता का संस्कार, बेहतर भारत का आधार

1.4 अरब से अधिक आबादी वाले देश में स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण बनाए रखना केवल सरकार या किसी एक संस्था की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। इतनी बड़ी आबादी वाले देश में स्वच्छता की चुनौती का समाधान केवल बेहतर बुनियादी सुविधाओं और नियमों के पालन से नहीं हो सकता। इसके लिए हमारे रोजमर्रा के व्यवहार में बदलाव भी जरूरी है। इसी दृष्टि से 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक देशभर के केन्द्रीय विद्यालयों में आयोजित स्वच्छता ही सेवा अभियान 2026 विशेष महत्व रखता है।

स्वच्छ भारत के निर्माण का सबसे प्रभावी और स्थायी तरीका है कि स्वच्छता की आदत बचपन से ही विकसित की जाए। बच्चे केवल पुस्तकों से नहीं सीखते, बल्कि वे अपने आसपास के वातावरण और अपने दैनिक व्यवहार से भी बहुत कुछ सीखते हैं। जब कोई बच्चा कूड़ेदान का उपयोग करना, कचरे को अलग-अलग करना, अपनी कक्षा को स्वच्छ रखना, इधर-उधर कूड़ा न फेंकना सीखता है और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है, तो स्वच्छता धीरे-धीरे उसके जीवन का स्वाभाविक हिस्सा बन जाती है। फिर स्वच्छता केवल किसी अभियान की गतिविधि नहीं रहती, बल्कि जीवनशैली का हिस्सा बन जाती है।



भारत की स्वच्छता की चुनौती वास्तव में हमारे नागरिक व्यवहार की भी चुनौती है। सड़कें, पार्क, सार्वजनिक स्थान और हमारे आसपास के क्षेत्र तभी स्वच्छ रह सकते हैं, जब हम स्वच्छता को केवल किसी और की जिम्मेदारी न मानें। नगर निकायों के कर्मचारियों और स्वच्छता कर्मियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन एक स्वच्छ समाज के निर्माण के लिए नागरिकों को भी अपने आसपास के वातावरण की जिम्मेदारी स्वयं लेनी होगी।

यहां विद्यालयों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। विद्यालय केवल शिक्षा देने के केंद्र नहीं हैं, बल्कि वे बच्चों की आदतों, सोच और मूल्यों को आकार देने वाले स्थान भी हैं। जो बच्चा सार्वजनिक स्थानों का सम्मान करना, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना, कचरे का जिम्मेदारी से निपटान करना और व्यक्तिगत एवं सामुदायिक स्वच्छता बनाए रखना सीखता है, वह इन आदतों को कक्षा से घर और फिर समाज तक लेकर जाता है।

इसलिए 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक की अवधि को केवल स्वच्छता संबंधी गतिविधियों के एक पखवाड़े के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यह स्वच्छता की एक स्थायी संस्कृति को मजबूत करने का अवसर है। स्वच्छता ही सेवा हमें यह संदेश देता है कि स्वच्छता केवल समाज के लिए की जाने

वाली सेवा नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत जिम्मेदारी भी है।

देशभर में अपनी व्यापक उपस्थिति के कारण केन्द्रीय विद्यालय युवा नागरिकों में स्वच्छता और जिम्मेदारी की भावना विकसित करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच हैं। कचरे के पृथक्करण और चार रंगों वाले कूड़ेदानों के उपयोग पर जोर देकर विद्यार्थियों को यह समझाया जा सकता है कि हर प्रकार के कचरे का प्रबंधन एक समान तरीके से नहीं किया जा सकता। इससे बच्चों में यह समझ भी विकसित होती है कि बेहतर और जिम्मेदार कचरा प्रबंधन की शुरुआत किसी बड़ी व्यवस्था से नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के छोटे-से दैनिक निर्णय से होती है।

एक स्वच्छ भारत केवल अभियानों से नहीं बनेगा। वह तब बनेगा, जब स्वच्छता हमारे दैनिक जीवन की आदत बनेगी; जब हम अपने आसपास की स्वच्छता के लिए किसी और की प्रतीक्षा नहीं करेंगे; और जब हर नागरिक यह समझेगा कि स्वच्छ भारत की जिम्मेदारी किसी और से नहीं, मुझसे शुरू होती है।

~ विकास गुप्ता, आईएएस
 ■ आयुक्त, के.वि.सं.

GPIA: हर स्तर पर निगरानी, हर कदम पर पारदर्शिता

सत्य नारायण गुलिया

■ संयुक्त आयुक्त (वित्त), के.वि.सं. (मु.)

केन्द्रीय विद्यालय संगठन का देशभर में बहुत बड़ा नेटवर्क है। इसमें 25 क्षेत्रीय कार्यालय, पांच आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण के संस्थान और 1,36,7 केन्द्रीय विद्यालय शामिल हैं। आंतरिक लेखा-परीक्षा व्यवस्था को और मजबूत बनाने के लिए के.वि.सं. के वित्त प्रभाग ने 27 दिसंबर 2021 को जनरल पूल ऑफ इंटरनल ऑडिटर्स (GPIA) की शुरुआत की।

इस पहल के तहत क्षेत्रीय कार्यालयों और केन्द्रीय विद्यालयों के अधिकारियों को आंतरिक लेखा-परीक्षा का कार्य करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। देशभर में आयोजित पांच प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से प्रत्येक क्षेत्र से लगभग 10 अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया। वर्तमान में GPIA में लगभग 250 प्रशिक्षित सदस्य हैं, जो के.वि.सं. की आंतरिक लेखा-परीक्षा व्यवस्था को मजबूत करने में सहयोग कर रहे हैं।

लेखा-परीक्षा की क्षमता को मजबूत करना
 विद्यालय स्तर पर प्रधानाचार्य केवल विद्यालय के शैक्षणिक प्रमुख ही नहीं होते, बल्कि वे आहरण एवं संवितरण अधिकारी (DDO) के रूप में वित्तीय और प्रशासनिक कार्यों की जिम्मेदारी भी संभालते हैं। दूसरी ओर, कई विद्यालयों में प्रशिक्षित कार्यालय कर्मचारियों की कमी रहती है।

क्षेत्रीय कार्यालयों में भी आंतरिक लेखा-परीक्षा के लिए कर्मचारियों की संख्या सीमित होती है। सामान्यतः एक वित्त अधिकारी के साथ दो या तीन अधिकारी काम करते हैं। प्रत्येक संभाग के अंतर्गत लगभग 65-70 केन्द्रीय विद्यालय आते हैं। ऐसे में सभी विद्यालयों की समय पर और एक समान तरीके से लेखा-परीक्षा करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

GPIA इस चुनौती को कम करने में मदद करता है। इसके माध्यम से प्रशिक्षित अधिकारियों का एक बड़ा समूह तैयार किया गया है, जो क्षेत्रीय लेखा-परीक्षा टीमों के साथ काम कर सकता है। इससे अधिक विद्यालयों की लेखा-परीक्षा समय पर हो पाती है। साथ ही, वित्तीय नियमों, खरीद प्रक्रिया और लेखांकन के नियमों को लागू करने में भी एकरूपता आती है।

प्रमुख लाभ

GPIA की इस पहल से अधिक विद्यालयों की समय पर लेखा-परीक्षा करने में मदद मिली है। इससे लेखा-परीक्षा के दौरान की गई टिप्पणियों की गुणवत्ता और उनमें एकरूपता भी बेहतर हुई है। साथ ही, आंतरिक वित्तीय नियंत्रण मजबूत हुए हैं।

इस व्यवस्था से बार-बार होने वाली वित्तीय और प्रक्रियागत कमियों की समय रहते पहचान करने में भी मदद मिलती है। लेखा-परीक्षा में भाग लेने वाले अधिकारियों को वित्तीय नियमों और लेखा-परीक्षा की प्रक्रियाओं का विशेष ज्ञान और व्यावहारिक अनुभव मिलता है। वहीं, विद्यालयों के कर्मचारियों को वित्तीय नियमों के पालन और सही प्रक्रियाओं के बारे में आवश्यक मार्गदर्शन मिलता है।

इस पहल का लाभ पूरे के.वि.सं. को मिल रहा है। इससे क्षेत्रीय कार्यालयों को अतिरिक्त प्रशिक्षित कर्मचारी मिलते हैं। वहीं, के.वि.सं. मुख्यालय को विद्यालय स्तर पर अपनाई जा रही वित्तीय कार्यप्रणालियों और सुधार की आवश्यकता वाले क्षेत्रों की बेहतर जानकारी मिलती है। के.वि.सं. मुख्यालय हर वर्ष लगभग 25 केन्द्रीय विद्यालयों की प्रत्यक्ष आंतरिक लेखा-परीक्षा भी करता है। इससे वित्तीय प्रशासन, खरीद प्रक्रिया, अभिलेखों के रखरखाव और नियमों के पालन की अतिरिक्त निगरानी होती है।

संस्थागत क्षमता का विकास

GPIA देशभर में फैले एक बड़े शैक्षणिक संगठन में आंतरिक लेखा-परीक्षा की क्षमता बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। विभिन्न स्तरों पर अधिकारियों को प्रशिक्षित करके के.वि.सं. ने अपनी लेखा-परीक्षा व्यवस्था को और मजबूत किया है। अब यह व्यवस्था केवल विशेष रूप से नियुक्त लेखा-परीक्षा टीमों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें विभिन्न स्तरों पर प्रशिक्षित अधिकारी भी सहयोग कर रहे हैं।

GPIA के सहयोग से होने वाली क्षेत्रीय लेखा-परीक्षाओं और मुख्यालय द्वारा की जाने वाली प्रत्यक्ष लेखा-परीक्षाओं से वित्तीय निगरानी की एक बहु-स्तरीय व्यवस्था तैयार हुई है। इससे केन्द्रीय विद्यालय संगठन में जवाबदेही, पारदर्शिता, एकरूपता और वित्तीय अनुशासन को और मजबूत करने में मदद मिल रही है।



अपनी भाषा, अपनी समझ मजबूत शिक्षा की बुनियादी पहल

एस. लक्ष्मी नारायण

■ प्राचार्य, पीएम श्री के.वि. क्र. 2 मद्रुरै

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मातृभाषा या घर की भाषा को एक स्वाभाविक माध्यम के रूप में मान्यता देती है, जिसके माध्यम से छोटे बच्चे अपनी सीखने की यात्रा शुरू करते हैं। नीति में यह सुझाव दिया गया है कि जहाँ संभव हो, प्रारंभिक वर्षों में बच्चों की घर की भाषा का उपयोग शिक्षा के माध्यम के रूप में किया जाए। परिचित भाषा में सीखने से बच्चों को अवधारणाओं को समझने, अपने विचार व्यक्त करने और कक्षा की गतिविधियों में अधिक आत्मविश्वास के साथ भाग लेने में मदद मिलती है।

इसी सोच के अनुरूप, केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों के 24 चयनित केन्द्रीय विद्यालयों में एक पायलट पहल शुरू की है। इस कार्यक्रम के तहत कक्षा-I से मातृभाषा आधारित शिक्षा शुरू की गई है। इसे स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार लागू किया जा रहा है और इसमें विद्यालय समुदाय की भी भागीदारी है।

शिक्षा के माध्यम के रूप में तमिल भाषा की शुरुआत के समय कुछ अभिभावकों के मन में बच्चों के भविष्य में भाषा सीखने और उनकी शैक्षणिक प्रगति को लेकर सवाल उठे। इन चिंताओं को दूर करने के लिए विद्यालय ने अभिभावक-शिक्षक बैठकों का आयोजन किया। इन बैठकों में कार्यक्रम के उद्देश्य, उसकी संरचना और आगे की कक्षाओं में इसके क्रमिक विकास के बारे में विस्तार से समझाया गया।

मातृभाषा आधारित शिक्षा का मुख्य ध्यान बुनियादी स्तर, विशेष रूप से कक्षा I और II पर है। इसमें भाषा और गणित की मजबूत बुनियादी समझ विकसित करने पर जोर दिया गया है। कक्षा III से विद्यार्थियों को धीरे-धीरे द्विभाषी शिक्षा की ओर बढ़ने में सहायता दी जाएगी। कक्षा V

तक उन्हें कक्षा VI से आगे की उच्च कक्षाओं में अपनाए जाने वाले सामान्य शिक्षा माध्यम के अनुसार सीखने के लिए तैयार किया जाएगा।

अभिभावकों के साथ नियमित बातचीत से यह स्पष्ट करने में मदद मिली कि इस पहल का उद्देश्य बच्चों के भाषा विकास को सीमित करना नहीं, बल्कि उसे और मजबूत करना है। कार्यक्रम को बेहतर ढंग से समझने के बाद अभिभावक आगे आए और उन्होंने मातृभाषा आधारित कक्षा के समर्थन में अपनी सहमति दी। शिक्षा में शुरुआती अनुभवों से पता चलता है कि विद्यार्थी सीखने की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं और उन्हें सीखने में अधिक सहजता महसूस हो रही है। यह विशेष रूप से गणित में दिखाई देता है। विद्यार्थी प्रश्नों का अधिक स्वतंत्रता से उत्तर दे पा रहे हैं और भाषा से जुड़ी झिझक के बिना अपनी समझ को व्यक्त कर पा रहे हैं।

यह पहल बुनियादी शिक्षा को मजबूत करने में घर की भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका को सामने लाती है। बच्चों को पहले से समझ आने वाली भाषा के साथ नई अवधारणाओं को जोड़कर यह कार्यक्रम उनकी विषय की समझ, आत्मविश्वास और प्रभावी संवाद क्षमता को मजबूत करने का प्रयास करता है। साथ ही, यह आगे चलकर अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी एक मजबूत आधार तैयार करता है।

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2, मद्रुरै का अनुभव एनईपी 2020 के बहुभाषी शिक्षा के व्यापक उद्देश्य को दर्शाता है। इसका लक्ष्य शुरुआती वर्षों में बच्चों की मजबूत बुनियाद तैयार करना और साथ ही उन्हें आगे चलकर कई भाषाओं में आत्मविश्वास के साथ सीखने तथा संवाद करने के लिए तैयार करना है।

सेवा संकल्प अभियान: चित्रों और विचारों में उभरा सपनों का भारत

देशभर के पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालयों में 17 सितंबर से 18 अक्टूबर 2026 तक 'सेवा संकल्प अभियान' का आयोजन किया जा रहा है। '25 करोड़ बच्चों के सपनों का भारत' थीम पर आधारित इस अभियान के माध्यम से विद्यार्थियों को अपने विचारों, कल्पनाओं और भविष्य के भारत के प्रति अपने दृष्टिकोण को व्यक्त करने का अवसर मिल रहा है। अभियान के अंतर्गत पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालयों में चित्रकला एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यार्थियों ने बताया कि वे भारत को किस रूप में देखते हैं तथा देश को विकसित, सशक्त और समृद्ध बनाने में वे स्वयं किस प्रकार योगदान दे सकते हैं। चित्रकला प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने अपनी कल्पनाशीलता और रचनात्मकता के माध्यम से अपने सपनों के भारत की तस्वीर प्रस्तुत की। वहीं, वाद-विवाद प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने देश के भविष्य से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने विचार, तर्क और दृष्टिकोण साझा किए। यह प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों को अपनी सोच व्यक्त करने के साथ-साथ देश के भविष्य और अपनी जिम्मेदारियों पर विचार करने का अवसर भी प्रदान कर रही है।



शिक्षक मंच



पीएम श्री के.वि. एनएफआर रंगिया की मुख्य अध्यापिका डॉ. मनीषा खेत्रपाल को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2026 से सम्मानित करती भारत की मा. राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु।

कक्षा से राष्ट्र-निर्माण तक केन्द्रीय विद्यालय संगठन में 21 वर्षा की प्रेरक यात्रा

डॉ. मनीषा खेत्रपाल

■ मुख्य अध्यापिका, पीएम श्री के.वि. एनएफआर रंगिया

जब किसी व्यक्ति के जीवन की विरासत की बात होती है, तो अक्सर उसकी संतान और परिवार को उसका आधार माना जाता है। लेकिन एक शिक्षक की असली विरासत उसकी कक्षा में दिखाई देती है—उन हजारों बच्चों की मुस्कान, जिज्ञासा, निडर सवालों और चमकती आँखों में, जिन्हें उसने सीखने और आगे बढ़ने की राह दिखाई है। मेरा घर भले ही रात में शांत रहता हो, लेकिन मेरा मन उन नन्हे विद्यार्थियों की स्मृतियों से हमेशा जीवंत रहता है, जो कभी मेरी कक्षा का हिस्सा रहे हैं।

पूर्वोत्तर से जुड़ा एक सार्थक सफर

21 वर्षों से अधिक के शिक्षकीय जीवन में मुझे विद्यार्थियों की बुनियादी और प्रारंभिक शिक्षा के महत्वपूर्ण चरणों में उनके साथ सीखने-सिखाने का अवसर मिला। केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने मुझे पूर्वोत्तर भारत, विशेष रूप से असम के विभिन्न केन्द्रीय विद्यालयों में विद्यार्थियों और समाज की सेवा करने का मंच प्रदान किया।

इस यात्रा में मेरा प्रयास केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रहा। मैंने बच्चों को स्वयं को पहचानने, अपनी क्षमताओं पर विश्वास करने और निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने को भी अपनी जिम्मेदारी माना।

मेरे लिए प्रत्येक बच्चा एक नई संभावना है। मेरा विश्वास है कि एक शिक्षक का सच्चा प्रभाव केवल उसके द्वारा पढ़ाए गए पाठ में नहीं, बल्कि उस विश्वास में दिखाई देता है, जो वह अपने विद्यार्थियों के भीतर जगाता है। इसलिए मेरा निरंतर प्रयास रहा है कि कक्षा का प्रत्येक बच्चा स्वयं को सुरक्षित, सम्मानित और महत्वपूर्ण हुआ महसूस करे।

सीखने को बनाया आनंददायक और समावेशी

मैंने विद्यार्थियों के समग्र विकास को केंद्र में रखते हुए, अपनी टीम के साथ मिलकर कई अभिनव और उद्देश्यपूर्ण पहल कीं।

प्रोजेक्ट दिव्यमित्र: प्रत्येक बच्चे के लिए संवेदनशील, सार्थक और समावेशी वातावरण तैयार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं एफएलएन लक्ष्य: बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान को सुदृढ़ करने के लिए रीडिंग बेंच, ओपन-एक्सेस लाइब्रेरी, रीडिंग लॉग और प्राथमिक कक्षाओं के लिए ‘फन विद मैथ एंड साइंस’ प्रदर्शनी जैसी पहल की गई। विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और अभिव्यक्ति को बढ़ाने के लिए ओपन माइक जैसे नवाचारों को भी अपनाया गया।

ईच वन - रीच वन: केन्द्रीय विद्यालय संगठन, गुवाहटी संभाग में प्रभावी रूप से लागू इस पहल का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि कोई भी बच्चा सीखने की प्रक्रिया में पीछे न छूटे।

माइंडफुलनेस एवं परामर्श: प्रशिक्षित काउंसलर के रूप में विद्यार्थियों के भावनात्मक और मानसिक कल्याण को ध्यान में रखते हुए नियमित माइंडफुलनेस गतिविधियों और परामर्श सत्रों का आयोजन किया गया।

सहयोग से नेतृत्व तक

केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने मुझे क्षेत्रीय और जोनल स्तर पर प्राथमिक शिक्षकों के क्षमता निर्माण कार्यक्रमों में रिसोर्स पर्सन के रूप में अपने अनुभव साझा करने का अवसर दिया। इससे न केवल साथी शिक्षकों के साथ सीखने का अवसर मिला, बल्कि कक्षा की प्रभावी प्रथाओं और नवाचारों को व्यापक स्तर तक पहुँचाने का मंच भी प्राप्त हुआ।

मेरे शिक्षकीय जीवन की उल्लेखनीय उपलब्धियों में ‘एजुलीड’ से जुड़ना भी शामिल है। समग्र शिक्षा असम और केन्द्रीय विद्यालय संगठन, गुवाहटी संभाग के सहयोग से संचालित इस पहल के अंतर्गत असम के पीएम श्री विद्यालयों के 382 प्राचार्यों एवं प्रधानाध्यापकों के लिए नेतृत्व क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

सम्मान से बढ़ी जिम्मेदारी

राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार मेरे लिए केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, बल्कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन के उन सभी कर्तव्यनिष्ठ शिक्षकों को समर्पित सम्मान है, जो विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य और कल्याण के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। यह सम्मान मेरे लिए एक नई जिम्मेदारी और प्रेरणा भी है। इस सम्मान के बाद मैं राष्ट्र-निर्माण की अपनी यात्रा को आगे भी पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध हूँ।



पीएम श्री के.वि. क्र. 2, मदुरै की मुख्य अध्यापिका सुश्री अमुथा जे. को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2026 से सम्मानित करती भारत की मा. राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु।

जिस विद्यालय ने संवारा बचपन, वहीं लौटकर सँवारी ज़िंदगिया

अमूथा जे.

■ मुख्य अध्यापिका, पीएम श्री के.वि. क्र. 2 मदुरै

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के साथ मेरी यात्रा आज एक पूर्ण चक्र की तरह महसूस होती है। मुझे अमला, असम, पुणे और भोपाल के केन्द्रीय विद्यालयों में पढ़ने का अवसर मिला। इन विद्यालयों में मैंने के.वि.सं. की समृद्ध विविधता, मूल्यों और एकता की भावना को करीब से अनुभव किया। विद्यार्थी के रूप में मिली शिक्षा, अनुशासन और संस्कारों ने मेरे जीवन की मजबूत नींव तैयार की।

वर्षों बाद जब मैं के.वि.सं. में प्राथमिक शिक्षिका के रूप में शामिल हुई, तो मैं उसी संस्था में लौटकर आई, जिसने कभी एक बच्चे के रूप में मेरा पालन-पोषण किया था। शिक्षिका और बाद में मुख्य अध्यापिका के रूप में आगे बढ़ते हुए के.वि.सं. ने मुझे कक्षा से बाहर भी सीखने, नए क्षेत्रों को जानने, नेतृत्व करने और समाज की सेवा करने के अनेक अवसर दिए। मेरे लिए शिक्षण केवल नौकरी नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का एक पवित्र कार्य है।

कक्षा से आगे सामुदायिक सेवा के क्षेत्र में भी मैंने अपने विद्यार्थियों को एक पंचायत यूनियन स्कूल और एक वृद्धाश्रम को सहयोग देने के लिए प्रेरित किया। वहाँ विद्यार्थियों ने सहपाठी शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका निभाई और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से बुजुर्गों के जीवन में खुशी के पल जोड़े।

के.वि.सं. ने मुझे स्वयं को पहचानने के कई अवसर दिए। इनमें एनसीसी, स्काउटिंग और गाइडिंग का विशेष स्थान है। एसोसिएट एनसीसी अधिकारी के रूप में मुझे कैडेट्स का मार्गदर्शन करने और उन्हें राष्ट्रीय स्तर के शिविरों तथा कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने का अवसर मिला। उनकी मेहनत को पहचान मिलते देखना, जिसमें तमिलनाडु सरकार की छात्रवृत्तियाँ भी शामिल हैं, मेरे लिए बेहद संतोष का विषय रहा है।

स्काउटिंग और गाइडिंग में अपने बुलबुल्स का मार्गदर्शन करना और उन्हें प्रतिष्ठित गोल्डन एरो अवॉर्ड प्राप्त करते देखना भी मेरे लिए उतना ही सुखद अनुभव रहा। मेरे विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ मेरे शिक्षक जीवन के सबसे अनमोल क्षणों में शामिल हैं।

के.वि.सं. ने मुझे साथी शिक्षकों के व्यावसायिक विकास में योगदान देने के अवसर भी दिए। संसाधन व्यक्ति और प्रशिक्षक के रूप में मैंने FLN, समग्र प्रगति कार्ड के कार्यान्वयन और एनसीएफ आधारित शिक्षा से जुड़े क्षमता निर्माण कार्यक्रमों में सहयोग किया। मैंने के.वि.सं. की विभिन्न शैक्षणिक सामग्रियों के निर्माण में भी योगदान दिया, जिनमें FLN मॉड्यूल, बालवाटिका सामग्री, बुनियादी साक्षरता से जुड़ी पहल और राष्ट्रीय स्तर की फॉनिक्स कार्यपुस्तिका शामिल हैं।

VIDYADAAN और DIKSHA के माध्यम से मुझे अपनी कक्षा से आगे बढ़कर देशभर के शिक्षकों और विद्यार्थियों तक योगदान पहुँचाने का अवसर मिला। विशेष रूप से CwSN और पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों के लिए कम लागत वाली, अनुभव आधारित और समावेशी शिक्षण-अधिगम सामग्री तैयार करना मेरी यात्रा का एक महत्वपूर्ण और संतोषदायक हिस्सा रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2026 मेरे जीवन के सबसे प्रिय सम्मानों में से एक है। फिर भी, मैं इसे केवल अपना सम्मान नहीं मानती। इसके पीछे मेरे शिक्षकों का आशीर्वाद, विद्यार्थियों का विश्वास, सहकर्मियों का प्रोत्साहन, परिवार का सहयोग और सबसे बढ़कर के.वि.सं. द्वारा दिए गए अनगिनत अवसर हैं।

के.वि.सं. ने मुझे केवल एक पेशा नहीं दिया। इसने मुझे एक उद्देश्य, सेवा का मंच और जीवनभर की पहचान दी है। आज भी मेरे भीतर एक के.वि. विद्यार्थी जीवित है; शिक्षक होना मेरा आह्वान है; मुख्य अध्यापिका होना मेरे लिए गर्व की बात है और के.वि.सं. परिवार का सदस्य होना मेरे लिए हमेशा कृतज्ञता का विषय रहेगा।

“जिस आँगन में बचपन ने शिक्षा की पहली किरण पाई,
उसी आँगन की सेवा में जीवन ने अपनी पहचान बनाई।”

नवाचार और समर्पण की जीत के.वि.सं. के चार शिक्षक सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के चार शिक्षकों को शिव नादर फाउंडेशन और ऑक्सफोर्ड सैड इंडिया (Oxford Said India) के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार 2026 से सम्मानित किया गया। यह के.वि.सं. के लिए गर्व की बात है और शिक्षकों के नवाचारपूर्ण एवं प्रभावी शिक्षण प्रयासों को मिली महत्वपूर्ण पहचान है।

पुरस्कारों के पहले संस्करण में 32 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से 9,400 पंजीकरण प्राप्त हुए। इस पहल में ऐसे शिक्षकों ने भाग लिया, जो नए तरीकों और विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण के माध्यम से कक्षा में सीखने को और बेहतर बनाने का प्रयास कर रहे हैं। इस दौरान चुने गए 79 शिक्षकों ने विशेषज्ञ निर्णायक मंडलों के सामने अपनी शिक्षण पद्धतियाँ, कक्षा में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों पर उनके प्रभाव से जुड़े प्रमाण प्रस्तुत किए।

इन पुरस्कारों का आयोजन ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के सैड बिजनेस स्कूल और शिव नादर फाउंडेशन द्वारा किया

के.वि.सं. के विजेता शिक्षक



बिजनेस स्टडीज

सुश्री आरती भोकर

स्नातकोत्तर शिक्षिका (वाणिज्य)



पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1, गया, बिहार



अर्थशास्त्र

सुश्री रेखा राजन कृष्णकुमारी

स्नातकोत्तर शिक्षिका (अर्थशास्त्र)



पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय पड्डम, तिरुवनंतपुरम, केरल



कंप्यूटर साइंस

सुश्री इशिता पांडे

स्नातकोत्तर शिक्षिका (कंप्यूटर साइंस)



केन्द्रीय विद्यालय एसईसीएल झगराखंड, छत्तीसगढ़



भूगोल

श्री विनायक कोहली

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (सामाजिक विज्ञान)



पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय कोंडागांव, छत्तीसगढ़



आपके गैजेट की उपयोगिता अभी बाकी है!

कम खरीदें, अधिक प्रयोग करें, मरम्मत करवाएं और जिम्मेदारी से री-साइकिल करें

दराज में पड़ा वह टूटा हुआ मोबाइल, स्टोर रूम में धूल से ढका पुराना कीबोर्ड और कार्यालय के कोने में वर्षों से पड़ा खराब प्रिंटर—कभी ये सभी हमारी रोजमर्रा की जिंदगी का अहम हिस्सा थे। आज एक टूटा टैबलेट, उलझा हुआ चार्जर और पुराना कंप्यूटर भले ही हमारे किसी काम के न हों, लेकिन इनकी कहानी यहीं खत्म नहीं होती। हमारी नजरों से ओझल होते ही ये गायब नहीं होते, बल्कि ई-कचरे का हिस्सा बन जाते हैं।

प्रकाशन प्रकोष्ठ

के.वि.सं. (मु.)

ई-कचरा क्या है?

इलेक्ट्रॉनिक कचरे (ई-कचरे) में फेंके गए पुराने कंप्यूटर, मोबाइल फोन, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और सर्किट शामिल होते हैं। भारत में हर साल 10 मिलियन टन से अधिक ई-कचरा उत्पन्न होता है। यह एक बढ़ता हुआ संकट है, जो हमारे पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिए खतरा बन रहा है।

ई-कचरा प्रबंधन क्यों जरूरी है?

ई-कचरे को गलत तरीके से और अनौपचारिक रूप से फेंकने से मिट्टी, हवा और भूजल में हानिकारक पदार्थ फैल सकते हैं। इससे पर्यावरण और लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है। वह उपकरण भले ही हमारे हाथों से निकल गया हो, लेकिन उसका पर्यावरण पर पड़ने वाला प्रभाव वहीं खत्म नहीं होता। ई-कचरे में सीसा, पारा और कैडमियम जैसे जहरीले पदार्थ पाए जाते हैं। गलत तरीके से फेंकने पर ये मिट्टी और पानी को प्रदूषित करते हैं, जिससे समाज और पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुंचता है।

“नया” अपनाने की संस्कृति

हम ऐसे समय में रह रहे हैं, जहाँ तकनीक लगातार आगे बढ़ रही है। नई तकनीक बेहतर प्रदर्शन, स्मार्ट सुविधाओं और बेहतर अनुभव का वादा करती है। हर कुछ महीनों में ऐसा लगता है कि हमारे लिए कोई नई चीज उपलब्ध है। तकनीक का आनंद लेने या जरूरत होने पर नया उपकरण खरीदने में कोई बुराई नहीं है। समस्या तब शुरू होती है, जब उपकरण बदलना जरूरत के बजाय आदत बन जाता है।

कई बार हमारे पास मौजूद उपकरण पूरी तरह ठीक काम कर रहा होता है। फिर भी हम नया उपकरण चाहते हैं। हमें लगता है कि बाकी सभी लोग आगे बढ़ रहे हैं और हम पीछे छूट रहे हैं। यहीं FOMO (Fear of Missing Out) यानी किसी चीज से पीछे छूट जाने का डर सामने आता है। यह “मैं इसे चाहता हूँ” को “मुझे इसकी जरूरत है” में बदल सकता है।

खासकर उन किशोरों और युवाओं के लिए, जिन्हें अपनी पहली कमाई खर्च करने की आजादी मिलती है, नए उपकरण का आकर्षण और भी ज्यादा हो सकता है। नया गैजेट उनकी मेहनत का इनाम, आत्मनिर्भरता का प्रतीक या केवल अपने पास रखने के लिए कोई रोमांचक चीज लग सकता है।

स्वच्छ भारत से स्वच्छ डिजिटल स्थानों तक

स्वच्छ भारत अभियान ने स्वच्छता को सभी की जिम्मेदारी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस अभियान ने लोगों को कचरे को अलग-अलग करने, स्वच्छता, सार्वजनिक स्थानों और रोजमर्रा की आदतों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया है। लेकिन आज का कचरा केवल प्लास्टिक के रैपर, भोजन के कचरे या फेंके गए कागज तक सीमित नहीं है। हमारे घर, कार्यालय और स्कूल तकनीकी उपकरणों से भरे हुए हैं। हर पुराना इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बढ़ते हुए कचरे में शामिल हो जाता है। इसलिए, स्वच्छ भारत का अर्थ हमारी डिजिटल जीवनशैली से उत्पन्न कचरे का जिम्मेदारी से प्रबंधन करना भी होना चाहिए।



2. Repair / बदलने से पहले मरम्मत करें

खराब हो चुके उपकरण को हमेशा फेंकने की जरूरत नहीं होती। मरम्मत, रखरखाव और अपग्रेड के माध्यम से किसी उपकरण की उपयोगिता अवधि बढ़ाई जा सकती है।

ई-कचरा प्रबंधन के लिए जिम्मेदार- 4R

ई-कचरे का प्रबंधन तब शुरू नहीं होता, जब कोई उपकरण कचरा बन जाता है। यह उससे बहुत पहले शुरू हो जाता है।

1. Refuse / अनावश्यक खरीदारी से इनकार करें

सबसे नया उपकरण हमेशा जरूरी नहीं होता। किसी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण को बदलने से पहले खुद से पूछें: क्या मुझे वास्तव में नए उपकरण की जरूरत है? किसी उपकरण का लंबे समय तक उपयोग करने से उत्पन्न होने वाले कचरे की मात्रा कम होती है।

3. Reuse / दोबारा उपयोग करें और नया रूप दें

जो उपकरण एक व्यक्ति के लिए उपयोगी नहीं रह गया है, वह किसी दूसरे व्यक्ति के लिए अब भी उपयोगी हो सकता है। किसी काम करने वाले उपकरण को तुरंत फेंकने के बजाय दान किया जा सकता है या दोबारा उपयोग में लाया जा सकता है।

4. Recycle / जिम्मेदारी से री-साइकिल करें

जब कोई उपकरण वास्तव में अपनी उपयोगी अवधि पूरी कर चुका हो, तो उसे सामान्य कचरे के डिब्बे में नहीं फेंकना चाहिए। उसे उचित संग्रह प्रणाली या अधिकृत ई-कचरा रीसाइक्लर को सौंपना चाहिए और स्थानीय कबाड़ वाले को नहीं देना चाहिए। जिम्मेदारी से रीसाइक्लिंग करने से उपयोगी और मूल्यवान सामग्री को दोबारा प्राप्त करने में मदद मिलती है और यह सुनिश्चित होता है कि ई-कचरे का पर्यावरण के लिए सुरक्षित तरीके से प्रसंस्करण किया जाए।

इस स्वच्छता पखवाड़े में, आइए केवल अपने आसपास की सफाई ही न करें। बल्कि अपनी उपभोग की आदतों को भी स्वच्छ और जिम्मेदार बनाएं।



इस स्वच्छता पखवाड़े, आइए केवल अपने आसपास की सफाई ही न करें, बल्कि अपनी उपभोग की आदतों में भी बदलाव लाएं:

- अपने परिवार का उपभोग संयमित करें।
- ई-कचरे को कम करें।
- मरम्मत करें, पुनः उपयोग करें और पुनर्वर्तन अपनाएं।
- स्वच्छ भारत को केवल एक अभियान नहीं, बल्कि अपनी जीवनशैली बनाएं।

संस्कृत प्रवाह

अमन्त्रमक्षरं नास्ति नास्ति मूलमनौषधम्।
अयोग्यः पुरुषो नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः॥

भावार्थ

ऐसा कोई अक्षर नहीं है जिसमें मन्त्रशक्ति ना हो, ऐसा कोई पौधा नहीं है जिसमें औषधि गुण ना हो तथा ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसमें कोई भी गुण ना हो, ऐसे व्यक्ति ही दुर्लभ हैं जो हर व्यक्ति में गुण देख कर उन्हें संघटित कर सकें।



विचारों से समाधान तक: ‘सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज’ पोर्टल का शुभारंभ



माननीय शिक्षा मंत्री श्री प्रल्हाद जोशी ने भारतीय विज्ञान संस्थान बेंगलुरु में ‘सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज’ की वेबसाइट और पंजीकरण पोर्टल का शुभारंभ किया। उन्होंने एक मजबूत नवाचार तंत्र विकसित करने के महत्व पर प्रकाश डाला और स्टार्टअप्स तथा उद्योग जगत के भागीदारों से युवा नवप्रवर्तकों को मार्गदर्शन देने का आह्वान किया, ताकि वे अपने विचारों को प्रोटोटाइप से व्यावहारिक समाधानों में बदल सकें।

कार्यक्रम में केन्द्रीय विद्यालय संगठन के लिए एक विशेष अवसर भी जुड़ा। केन्द्रीय विद्यालय आईआईएससी बेंगलुरु के विद्यार्थियों को श्री प्रल्हाद जोशी ने अपने साथ दीप प्रज्वलित करने के लिए आमंत्रित किया। इस अवसर पर केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों ने नवाचार, सेवा और युवाओं द्वारा विकसित समाधानों को समर्पित राष्ट्रीय मंच पर अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

विचारणीय विचार

"अपने आप को खोजने का सबसे अच्छा तरीका है कि आप खुद को दूसरों की सेवा में खो दें।"

~ महात्मा गांधी



सितंबर 2026 की गतिविधियां



राजभाषा कीर्ति पुरस्कार-2026
के.वि.सं. में हिन्दी के व्यापक प्रयोग को मिला सम्मान

राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट एवं व्यापक प्रयोग के लिए केन्द्रीय विद्यालय संगठन को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार-2026 (द्वितीय) से सम्मानित किया गया। हिन्दी दिवस के अवसर पर मुंबई के सिडको एक्जीबिशन सेंटर में आयोजित समारोह में केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय एवं श्री बांदी संजय कुमार ने केन्द्रीय विद्यालय संगठन को यह पुरस्कार प्रदान किया। केन्द्रीय विद्यालय संगठन की ओर से संयुक्त आयुक्त प्रशासन श्रीमती नीलम ने यह पुरस्कार ग्रहण किया। संगठन को प्राप्त यह पुरस्कार

राजभाषा हिन्दी के प्रभावी कार्यान्वयन के प्रति उसकी निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह सम्मान संगठन में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा राजभाषा संबंधी प्रावधानों के प्रभावी अनुपालन के प्रयासों का प्रमाण है। साथ ही, कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के सहज एवं व्यापक प्रयोग की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को भी मान्यता प्राप्त हुई है। यह पुरस्कार संगठन को राजभाषा के क्षेत्र में और अधिक प्रभावी एवं उत्कृष्ट कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा।

हिन्दी माह: भाषा, संस्कृति और विरासत का उत्सव

भारत की भाषाई विविधता उसकी सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक है और हिन्दी इस विविधता को जोड़ने वाली सशक्त कड़ी है। हिन्दी के महत्व, समृद्ध साहित्य और अभिव्यक्ति-परंपरा से विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों को जोड़ने के उद्देश्य से केन्द्रीय विद्यालय संगठन में 1 से 30 अक्टूबर 2026 तक हिन्दी माह का आयोजन किया गया।

हिन्दी से जुड़ते कर्मचारी

नई दिल्ली स्थित के.वि.सं. मुख्यालय में 1 अक्टूबर को के.वि.सं. आयुक्त श्री विकास गुप्ता, आईएसएस ने दीप प्रज्ज्वलित कर हिन्दी माह का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने हिन्दी को भारतीय संस्कृति, भावनात्मक एकता और राष्ट्रीय जुड़ाव की सशक्त भाषा बताते हुए सभी को हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित किया।

माह के दौरान मुख्यालय में कर्मचारियों के लिए सुलेख, कंप्यूटर पर हिन्दी टंकण, निबंध लेखन और कविता पाठ जैसी विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। 14 अक्टूबर को हिन्दी दिवस के अवसर पर माननीय शिक्षा मंत्री के संदेश एवं आयुक्त महोदय की अपील का वाचन किया गया। साथ ही, हिन्दी कार्यशाला एवं हिन्दी पुस्तकों पर चर्चा-परिचर्चा के माध्यम से कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के सरल एवं प्रभावी प्रयोग तथा हिन्दी साहित्य के पठन को प्रोत्साहित किया गया। हिन्दी माह के दौरान हुई विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को 30 अक्टूबर 2026 को आयोजित समापन समारोह में पुरस्कृत किया गया।

केन्द्रीय विद्यालयों में हिन्दी का उत्सव

देशभर के केन्द्रीय विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए निबंध लेखन, वाद-विवाद, कविता पाठ, भाषण और सुलेख सहित अनेक रचनात्मक एवं ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। ऑनलाइन मंचों के माध्यम से भी विभिन्न



कार्यक्रमों की श्रृंखला प्रस्तुत की गई, जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इन गतिविधियों ने विद्यार्थियों की भाषाई दक्षता, रचनात्मकता और आत्मविश्वास को बढ़ाने के साथ उन्हें हिन्दी भाषा एवं साहित्य से जोड़ा। हिन्दी माह ने यह संदेश सशक्त किया कि हिन्दी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत, भावनात्मक एकता और राष्ट्रीय जुड़ाव की महत्वपूर्ण आधारशिला है।

GPIA से मजबूत हुई लेखा-परीक्षा व्यवस्था



केन्द्रीय विद्यालय संगठन के GPIA (General Pool of Internal Auditors) के पाँचवें क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन 15 से 17 सितंबर 2026 तक आईआईटी गुवाहटी में किया गया। इसमें के.वि.सं के पाँच संभागों के अधिकारियों ने भाग लिया। तीन दिवसीय इस कार्यक्रम का उद्देश्य आंतरिक लेखा-परीक्षकों के व्यावसायिक ज्ञान और कौशल को मजबूत करना तथा के.वि.सं. में आंतरिक लेखा-परीक्षा की कार्यप्रणाली को अधिक प्रभावी बनाना था।

कार्यक्रम के दौरान विभिन्न क्षमता निर्माण सत्र आयोजित किए गए, जिनमें आंतरिक लेखा-परीक्षा प्रक्रिया में दक्षता, एकरूपता और पेशेवर दृष्टिकोण को बढ़ावा देने पर विशेष ध्यान दिया गया। यह पहल के.वि.सं. में संस्थागत व्यवस्थाओं को मजबूत करने और अधिकारियों की व्यावसायिक क्षमता बढ़ाने के संगठन के निरंतर प्रयासों को दर्शाती है।

के.वि.सं. (मू.) में किया गया स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन



केन्द्रीय विद्यालय संगठन के मुख्यालय में कर्मचारियों के लिए 17 सितंबर 2026 को मिनिमल एक्सेस सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल के सहयोग से स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किया गया। शिविर का उद्देश्य कर्मचारियों को कार्यस्थल पर ही आवश्यक स्वास्थ्य जांच की सुविधा उपलब्ध कराना और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना था। शिविर में आंखों और दांतों की जांच, रक्तचाप, मधुमेह तथा आवश्यक रक्त जांच की गई। इसके साथ ही डॉक्टरों ने कर्मचारियों को CPR का प्रदर्शन भी करके दिखाया। इसके माध्यम से कर्मचारियों को अपात स्थिति में किसी व्यक्ति की जान बचाने के लिए आवश्यक प्राथमिक कौशल की जानकारी दी गई। यह पहल के.वि.सं. की ओर से अपने कर्मचारियों के स्वास्थ्य, जागरूकता और निवारक स्वास्थ्य देखभाल को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

आयुर्वेद से स्वरथ कल की ओर बढ़ते केन्द्रीय विद्यालय



देशभर के केन्द्रीय विद्यालयों में 23 सितंबर 2026 को 11वाँ आयुर्वेद दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। “स्वस्थ कल के लिए आयुर्वेद” थीम तथा “एक स्वास्थ्य, एक भविष्य: प्रमाण, नवाचार और समग्र देखभाल के माध्यम से आयुर्वेद विज्ञान का एकीकरण” टैगलाइन पर आधारित इस वर्ष के आयोजन में विद्यार्थियों को आयुर्वेद, स्वास्थ्य और सतत जीवनशैली के महत्व से परिचित कराने के लिए विद्यालयों में विविध जागरूकता एवं रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन किया गया। विद्यालयों में विशेष प्रार्थना सभाओं, नाट्य प्रस्तुतियों, वाद-विवाद, निबंध लेखन और पोस्टर निर्माण जैसी गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को दैनिक जीवन में आयुर्वेद की उपयोगिता और प्रासंगिकता को समझने का अवसर मिला। स्वस्थ जीवनशैली और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विद्यार्थियों ने आयुर्वेदिक एवं औषधीय पौधों के रोपण में भी उत्साहपूर्वक भाग लिया।

स्वच्छता का संदेश, केन्द्रीय विद्यालयों का संकल्प

देशभर के केन्द्रीय विद्यालयों में 1 से 15 सितंबर 2026 तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान विद्यार्थियों और शिक्षकों ने यह संदेश दिया कि स्वच्छता केवल किसी अभियान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारी साझा जिम्मेदारी और रोजमर्रा की आदत है। पखवाड़े की शुरुआत स्वच्छता शपथ के साथ हुई। इसके बाद जागरूकता, रचनात्मक और सामुदायिक गतिविधियों का आयोजन किया गया।



ग्रीन स्कूल ड्राइव के तहत विद्यार्थियों ने स्वच्छ और टिकाऊ वातावरण का संदेश देने वाले नारे, पोस्टर और पर्चे तैयार किए। केन्द्रीय विद्यालयों में स्वच्छता जागरूकता दिवस, सामुदायिक सहभागिता दिवस और हस्त प्रक्षालन दिवस भी मनाए गए। इन गतिविधियों के माध्यम से स्वच्छता और व्यक्तिगत साफ-सफाई का संदेश कक्षाओं से निकालकर समुदाय तक पहुंचाया गया।

विद्यार्थियों ने निबंध, नारा और कविता लेखन, चित्रकला, क्विज, वाद-विवाद प्रतियोगिता और मॉडल निर्माण जैसी विभिन्न गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लिया। अभियान के दौरान मिशन LiFE के 'ई-वेस्ट कम करें' संदेश को भी बढ़ावा दिया गया। विद्यार्थियों को इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की मरम्मत, दोबारा उपयोग और जिम्मेदारी के साथ निस्तारण के लिए प्रेरित किया गया। स्वच्छता पखवाड़े की इन गतिविधियों ने विद्यार्थियों में स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और नागरिक जिम्मेदारी की भावना को मजबूत करने का संदेश दिया।

पोषण माह का संकल्प: स्वरथ हो बचपन, सशक्त हो भारत



देशभर के केन्द्रीय विद्यालयों में 9 सितंबर से 8 अक्टूबर 2026 तक 9वें राष्ट्रीय पोषण माह के अंतर्गत विभिन्न जागरूकता एवं शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस दौरान विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों को संतुलित आहार, पोषण, स्वच्छता तथा स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से विद्यालयों में विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। अभियान के दौरान विद्यार्थियों के लिए पोषण जागरूकता रैलियाँ, पोस्टर एवं चित्रकला प्रतियोगिताएँ, निबंध लेखन, प्रश्नोत्तरी, भाषण तथा जागरूकता गतिविधियों का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों को संतुलित एवं पौष्टिक आहार के महत्व, स्थानीय एवं मौसमी खाद्य पदार्थों के उपयोग तथा भोजन में विभिन्न पोषक तत्वों को शामिल करने के बारे में भी जानकारी दी गई। यही नहीं, विद्यार्थियों ने विभिन्न राज्यों की संस्कृति के अनुरूप पारंपरिक व्यंजन लाकर एक साथ बैठकर सामूहिक भोजन भी किया।

उभरते सितारे

सुप्रिया ने विश्व मंच पर बढ़ाया के.वि.सं. का गौरव

केन्द्रीय विद्यालय (ऑयल) दुलियाजान की प्रतिभाशाली छात्रा सुप्रिया गोगोई ने जापान के त्सुचुरा में आयोजित 7वीं IFA वर्ल्ड आर्म रेसलिंग चैंपियनशिप 2026 में शानदार प्रदर्शन करते हुए दो स्वर्ण पदक अपने नाम किए। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मिली इस सफलता के साथ सुप्रिया ने न केवल अपनी प्रतिभा और मेहनत का परिचय दिया, बल्कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन का गौरव भी बढ़ाया। उनका यह शानदार प्रदर्शन दृढ़ संकल्प, अनुशासन और निरंतर अभ्यास का परिणाम है। अंतरराष्ट्रीय मंच पर उनकी उपलब्धि केन्द्रीय विद्यालयों में विद्यार्थियों को खेलों के लिए मिल रहे प्रोत्साहन और उनकी प्रतिभा को निखारने के प्रयासों को भी दर्शाती है। सुप्रिया की सफलता निश्चित रूप से अन्य विद्यार्थियों को भी खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ने, अपने लक्ष्य के लिए मेहनत करने और देश का नाम रोशन करने के लिए प्रेरित करेगी।

